SALTOC Project

Title: Madhumatī

Imprint: Udayapura : Rājasthāna Sāhitya Akādamī (Saṅgama)

OCLC: 3195624

Volume 25, number 3 (Mar 1986)

TOC Supplied by: University of California, Berkeley

मधुमती

मार्च, 86

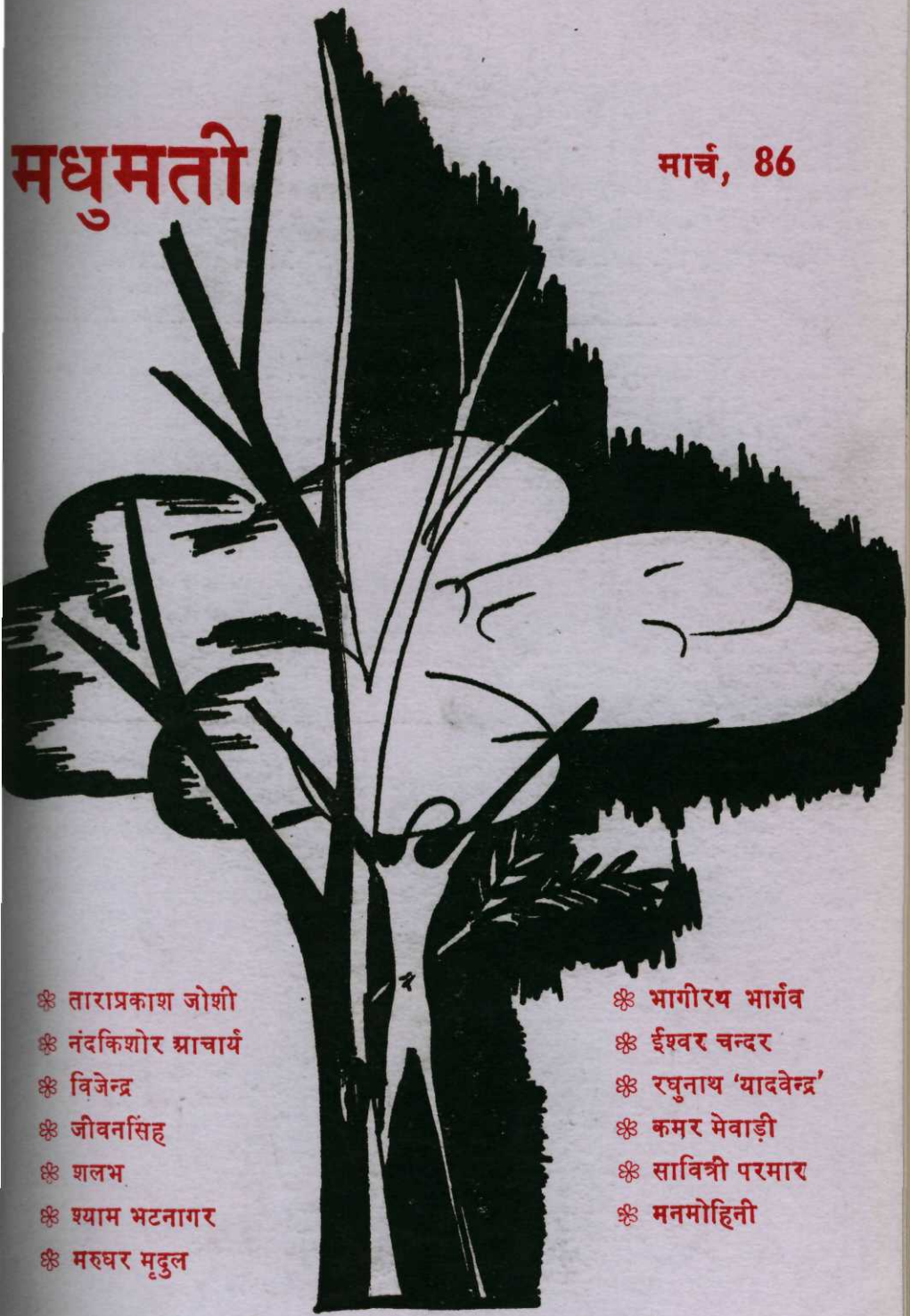

- ताराप्रकाश जोशी
- नंदकिशोर आचार्य
- विजेन्द्र
- जीवनसिंह
- शलभ
- श्याम भटनागर
- मरुधर मृदुल
- भागीरथ भार्गव
- ईश्वर चन्दर
- रघुनाथ 'यादवेन्द्र'
- कमर मेवाड़ी
- सावित्री परमार
- मनमोहिनी

बच्चों को टीके लगवाएं
कई रोगों से उन्हें बचाएं

सही वक्त पर और सही उम्र में बच्चे को टीका लगवाने से आप उसे डिप्थीरिया, काली खांसी, टिटेनस, पोलियो, टी० बी० और खसरे की खतरनाक बीमारियों से बचा सकते हैं। इन बीमारियों से उसकी मृत्यु भी हो सकती है या वह सदा के लिए अपाहिज हो सकता है। ये टीके सरकारी अस्पतालों, दवाखानों और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में मुफ्त लगाए जाते हैं।

टीका कब लगवाएं ?

उम्र	टीका	खुराकों की संख्या	रोग
■ गर्भवती स्त्रियां		2*	टिटेनस
16-36 सप्ताह	टी टी (मां और बच्चे दोनों की रक्षा करता है)		
■ शिशु			
3-9 महीने	डी पी टी	3	डिप्थीरिया, काली खांसी, टिट
	पोलियो	3	पोलियो
	बी सी जी	1	टी० बी०
9-12 महीने	खसरा	1	खसरा
18-24 महीने	डी पी टी	1 (बूस्टर)	
	पोलियो	1 (बूस्टर)	

* यदि पहले टीका लगा है तो एक टीका लगाएं।

दो खुराकों के बीच एक महीने से कम का अन्तर नहीं होना चाहिए। मामूली खांसी, जुकाम, हल्का बुखार और अतिसार होने पर भी टीका दिया जाता है।

व्यापक शिशु रोग प्रतिरक्षण कार्यक्रम श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्म दिवस 19 नवम्बर 1985 को शुरू किया गया। इस कार्यक्रम का सफल क्रियान्वयन ही उनका सजीव स्मारक होगा।

मार्च '86
वर्ष 25, अंक–3

सम्पादक :
प्रकाश आतुर

क्रम

कविताएं	:	गीत/9/लेनिन/17/ताराप्रकाश जोशी
लेख	:	गीतों का बंजारा : ताराप्रकाश जोशी/20/रघुवेन्द्र सिंह 'यादवेन्द्र'/कविता, भविष्य और आज का कवि/33/नन्दकिशोर आचार्य/प्रचारात्मक माध्यम और साहित्य/40/विजेन्द्र/राज्यसत्ता और लेख/48/जीवन सिंह/एक बहस आदमी पर/57/श्याम भटनागर
कहानी	:	खुद के लिए/65/ईश्वर चंदर/अलविदा जंगल/69/कमर मेवाड़ी/एक क्लर्क की मौत/74/लेखक : चेखव – अनु. : मरुधर मृदुल
मेरा शहर	:	मेरा शहर अलवर/79/भागीरथ भार्गव
किताबें	:	फिर सुबह होगी–सुधेश/91/सावित्री परमार/बोले रक्त शहीद का—बलवीर सिंह 'करुण' / 97 / शलभ / लौटो सिन्दबाद, जिसे सब जिएं, पानी गाने लगा/99/मनमोहिनी
आवरण	:	हिमांशु जैन, अजमेर